International Journal of New Media Studies (IJNMS), ISSN: 2394-4331
Volume 13 Issue 1, January-June, 2026, Impact Factor: 9.456

वैश्वीकरण के युग में उदारवाद के समक्ष आने वाली चुनौतियों का एक अध्ययन

डॉ. सुशील दत

सहायक प्राध्यापक, राजनीति विज्ञान विभाग, राजकीय महिला महाविद्यालय गुरावडा (रेवाडी)

सारांश

उदारवाद का उद्भव धार्मिक प्रभुत्व और राजनीतिक प्राधिकारवादी शक्तियों के विरुद्ध प्रतिक्रिया स्वरूप हुआ। इस विचारधारा का उद्देश्य मनुष्य को धार्मिक अंधविश्वासों से मुक्त कराना था। उदारवाद मुक्त व्यापार और वैश्विक सहयोग का समर्थन करता है। यह विचारधारा मनुष्य की विवेकशीलता में विश्वास करते हुए मनुष्य को पारिवारिक, धार्मिक, राजनीतिक व आर्थिक मामलों में अत्यधिक स्वतंत्रता प्रदान करती है। उदारीकरण के परिणामस्वरूप वर्तमान विश्व एक गाँव की भाँति प्रतीत होता है। उदारीकरण एक ऐसी विचारधारा है जिसने सम्पूर्ण विश्व में परिवर्तन ला दिया है। उदारीकरण के कारण विश्व में शांति, स्वतंत्रता, समानता में वृद्धि हुई है। इस विचारधारा ने मानवीय जीवन में बहुमुखी परिवर्तन किए हैं। मनुष्य राजतंत्र, धर्म से मुक्त होकर अपने जीवन को सुखमय बनाने का प्रयत्न कर रहा है। मनुष्य अपनी बुद्धि के बल पर अंधविश्वास को समाप्त करने का प्रयास करता है। इस विचारधारा के कारण केवल एक मानव के जीवन में ही परिवर्तन नहीं हो रहा है अपितु सम्पूर्ण विश्व में परिवर्तन हो रहे हैं। इस शोध पत्र का उद्देश्य वैश्वीकरण के युग में उदारीकरण के बारे में जानकारी प्राप्त करना है तथा उदारीकरण के समक्ष आने वाली चुनौतियों का अध्ययन करना है।

सार शब्द - उदारीकरण, वैश्वीकरण, राजतंत्र, विचारधारा, अंधविश्वास, स्वतंत्रता, समानता।

प्रस्तावना

उदारवाद की उत्पत्ति 17वीं और 18वीं शताब्दी में देखी जा सकती है, जिसमें जॉन लॉक और एडम स्मिथ जैसे विचारकों ने महत्वपूर्ण योगदान दिया। हालांकि, इसकी जडें पश्चिमी संस्कृति में और गहरी हैं। मैग्ना कार्टा (1215) ने यह सिद्धांत स्थापित किया कि राजा भी कानून के अधीन है, जिसने जूरी द्वारा मुकदमा, उचित प्रक्रिया, और कानून के समक्ष समानता जैसे विचारों को पेश किया, जो 14वीं शताब्दी के मध्य तक और मजबूत हुए। 15वीं शताब्दी के मध्य में, जॉन फोर्टेस्क्यू के "द डिफरेंस बिटवीन एन एब्सोल्यूट एंड लिमिटेड मोनार्की ने सीमित राजतंत्र" की वकालत की, जो उदारवादी विचारों की ओर एक शुरुआती कदम था। जॉन लॉक के, "टू ट्रीटाइज ऑफ गवर्नमेंट (1689)" ने प्राकृतिक अधिकारों (जीवन, स्वतंत्रता, और संपत्ति) और सामाजिक अनुबंध के आधार पर राजनीतिक उदारवाद की नींव रखी। एडम स्मिथ के "द वेल्थ ऑफ नेशंस (1776)" ने मुक्त बाजारों और स्व-हित के अदृश्य हाथ की वकालत करके आर्थिक उदारवाद को आकार दिया।

उदारवाद एक ऐसी विचारधारा है जो मनुष्यों को जीवन के प्रत्येक क्षेत्र में सतत् रूप से आगे बढ़ने के लिए प्रेरित करती है। 21वीं सदी को वैश्वीकरण का युग कहा जाता है, इस युग मंा किसी व्यक्ति पर कोई भौगोलिक सीमा या सांस्कृतिक सीमाओं का बंधन नहीं है। यह विचारधारा व्यक्ति को बंधनों से मुक्ति, लोकतंत्र, मानवाधिकार, मुक्त बाजार को बढ़ावा देती है। उदारवादी विचारधारा सत्तावादी व्यवस्था का विरोध करती है। उदारवादी व्यवस्था में मानव को चयन के अनेक

विकल्प प्राप्त होते हैं। चयन का क्षेत्र स्थैतिक न होकर गतिशील होता है और मनुष्य की आवश्यकताओं अनुरूप परिवर्तित होता रहता है।

उदारवाद नई उत्पादक शक्तियों के मार्ग में रुकावट डालने वाले कानूनों, रिवाजों, धर्म, दमनकारी राजनीतिक शासन, असहनशील, धार्मिक प्राधिकरण, दासता या अधीन अवस्था का विरोध करता है।

सकारात्मक उदारवादी के विचार में, समाज द्वारा की गई जोर-जबरदस्ती व्यक्ति की स्वतन्त्रता को उतनी सीमित कर सकती है जितनी राज्य द्वारा की गई जबरदस्ती । वह विलियम फॉन हम्बोल्ट के विचार का उद्धरण करता है जो अपनी पुस्तक (The Sphere and Duties of Government) में यह आग्रह करता है कि राज्य को अपने नागरिकों के सकारात्मक कल्याण के लिए किसी प्रयास से दूर रहना चाहिए और उनकी पारस्परिक सुरक्षा व विदेशी शत्रुओं से रक्षा की आवश्यकता से अधिक एक कदम भी आगे नहीं जाना चाहिए, क्योंकि उसे किसी अन्य उद्देश्य से स्वतंत्रता पर लगे प्रतिबन्धों में कोई वृद्धि नहीं करनी चाहिये ।

उदारवादी विचारधारा व्यक्तिवादी विचारधारा की भाँति व्यक्ति को राज्य से प्राथमिकता प्रदान करती है। यह विचारधारा राज्य को व्यक्ति की स्वतंत्रता में बाधक समझती है परन्तु यह राज्य को केवल मनुष्य की बाहरी आक्रमणों से सुरक्षा के लिए आवश्यक मानती है। यह राज्य को एक आवश्यक बुराई के रूप में मानती है तथा राज्य को कम से कम कार्य सौंपने के पक्ष में है।
उदारवाद की विशेषताएँ

एच० एडम स्मिथ, जर्मी बैंथम, जेम्स मिल, लास्की, टी० एच0 ग्रीन आदि विचारको ने उदारवाद की निम्न विशेषताओं को व्यक्त किया है जो कि इस प्रकार से हैं-

मानवीय स्वतंत्रता का समर्थक
उदारवादियों का मत है कि मनुष्य अपना सर्वांगीण विकास स्वतंत्र होकर ही कर सकता है। मनुष्य की बुद्धि पर किसी भी बाह्य सत्ता का नियंत्रण नहीं होना चाहिए। उसे अपने सामाजिक, आर्थिक, राजनैतिक व धार्मिक क्रियाकलापों में पूर्ण स्वतंत्रता प्राप्त होनी चाहिए।

मानव के प्राकृतिक अधिकारों का समर्थक
उदारवादियो का मत है कि मनुष्य को प्राकृतिक अधिकार जन्म से ही प्राप्त होते हैं। जॉन लॉक ने मनुष्य के तीन प्राकृतिक अधिकारों के बारे में बताया। उनका मत है कि जीवन, स्वतंत्रता व संपति के अधिकार मनुष्य के लिए नितान्त आवश्यक है।

धर्म निरपेक्षता में विश्वास
उदारवादी विचारधारा धर्म निरपेक्षता में विश्वास करती है। उदारवादियों का मत है कि धर्म के नाम पर लोगों पर बड़े अत्याचार हुए हैं। उनका मत है कि धर्म मनुष्य का व्यक्तिगत मामला है । इसमें राज्य को हस्तक्षेप नहीं करना चाहिए। राज्य व धर्म का कोई संबंध नहीं है।

मानवीय बुद्धि में विश्वास
उदारवादी विचारधारा मनुष्य की बुद्धि में विश्वास करती हैं। मनुष्य को प्रत्येक कार्य अपनी बुद्धि की कसौटी पर परख कर करना चाहिए। उदारवादी विचारधारा अन्धविश्वासों का विरोध करती है तथा वैज्ञानिक दृष्टिकोण पर बल देती है।

राज्य साधन, मनुष्य साध्य
उदारवादी विचारकों का मत है कि मनुष्य के कल्याण के लिए राजनीतिक व्यवस्था या राज्य का निर्माण किया गया है। सम्पूर्ण राजनीतिक व्यवस्था का केंद्र बिंदु मनुष्य है। राज्य का प्रत्येक क्रियाकलाप मनुष्य के लिए है।

लोकतंत्र में विश्वास

उदारवादी विचारक लोकतांत्रिक पद्धति में विश्वास करते हैं। लोकतांत्रिक व्यवस्था में ही जनता का जीवन, सम्पति, स्वतंत्रताएँ व उनके अधिकार सुरक्षित होते हैं। उदारवादी विचारधारा संसद , न्यायपालिका, वयस्क मताधिकार, चुनाव आदि संवैधानिक व्यवस्थाओं का समर्थन करती है।

राज्य एक कृत्रिम संस्था

उदारकारियों का मत है कि राज्य एक कृत्रिम संस्था है। राज्य कोई प्राकृतिक या दैवीय संस्था नहीं है बल्कि एक कृत्रिम संस्था है। राज्य का निर्माण व्यक्ति और समाज के लोगों ने आपस में मिलकर किया है कि ताकि व्यक्ति अपनी सभी आवश्यकताओं की पूर्ति कर सके। उदारवादी विचारकों ने राज्य की उत्पति व विकास के संदर्भ में सामाजिक समझौते का विकास किया है।

केन्द्रीयकरण का विरोध
उदारवादी विचारधारा केन्द्रीयकरण का विरोध करती है। उदारवादी विचारकों का मत है कि राज्य की शक्तियों का केन्द्रीयकरण मानव के लिए अत्याधिक हानिकारक है। इसके कारण मानवीय अधिकारों व स्वतंत्रता का ह्ास होता है।

स्वतंत्र व्यापार
उदारवादी विचारक स्वतंत्र व्यापार का समर्थन करते हैं। उनका मत है कि स्वतंत्र व्यापार से राज्य की आर्थिक दशाओं में सुधार होता है। राज्य के पास कर के रूप में अत्याधिक धन एकत्रित हो जाता है जिसके कारण राज्य जनकल्याण के कार्य कर सकता है। उदारवादी विचारक स्वतंत्र प्रतियोगिता का समर्थन करते है।

वैश्वीकरण
उदारवादी व्यवस्था वैश्वीकरण का समर्थन करती है। उदारवादी विचारकों का मत है कि उदारीकरण के कारण ही सम्पूर्ण विश्व एक गाँव की भाँति हो गया है जिसके कारण राज्यों में परस्पर सहिष्णुता का निरन्तर विकास हो रहा है तथा युद्धों में भी निरन्तर कमी आ रही है। एक देश दूसरे देश के साथ सम्बंधों को सुधारने का प्रयास कर रहा है ताकि नागरिकों का जीवन कल्याणमय बन सके।

वैश्वीकरण के युग में उदारवाद के समक्ष चुनौतियाँ
राष्ट्रवाद का उभार
21वीं सदी में अमेरिका, भारत, रूस, चीन, इंग्लैण्ड आदि देशों ने पहले अपना देश जैसी नीतियों को आरम्भ कर दिया है। अमेरिका ने हाल ही के दिनों में अमेरिकन कम्पनियों से अपील की है कि वे भारतीयों को नौकरियाँ ना दें । अमेरिका द्वारा नागरिकता को लेकर निरंतर आदेश जारी किये जा रहें है जो प्रवासी नागरिकों के लिए समस्याएँ उत्पन्न कर रहे हैं। अमेरिका द्वारा शुल्क को लेकर भी निरन्तर नई-नई नीतियाँ बनाई जा रही है। भारत भी मेड इन इंडिया की अवधारणा पर कार्य कर रहा है।

आर्थिक विषमता में वृद्धि
उदारवादी विचारधारा के कारण सम्पूर्ण विश्व में निरन्तर आर्थिक विषमता में वृद्धि हो रही है जिसके कारण अमीर और अमीर होते जा रहे हैं, गरीब और गरीब होते जा रहे हैं। उदारीकरण के कारण बडे-बडे व्यापारी बैंकों से अत्यधिक लोन प्राप्त कर लेते हैं तथा व्यापार में हानि दिखाकर सरकार से लोन माफ भी करा लेते हैं। बिना नियंत्रण की प्रतियोगिता के कारण अमीर उद्योगपति छोटे उद्योगों को पनपने से पहले ही अपने हथकण्डो से समाप्त कर देते हैं ताकि बाजार में उनका कोई प्रतियोगी न आ सके।

संयुक्त राष्ट्र विकास कार्यक्रम की रिर्पोट विश्व में आर्थिक असमानता रिपोर्ट का प्रकाशन करता है जिसमें यह जानकारी दी जाती है कि विश्व में कितनी आर्थिक असमानता है। यूएनडीपी रिर्पोट 2022 से पता चला है कि विश्व के 10 प्रतिशत अमीर व्यक्ति वैश्विक आय का 52 प्रतिशत कमा रहे हैं जबकि सबसे गरीब आधा हिस्सा 8 प्रतिशत ही कमा रहे हैं। इसके अतिरिक्त धन का केन्द्रीकरण भी अत्यधिक असमान है जहाँ सबसे निम्नतम 50 प्रतिशत लोगों के पास विश्व के धन का मात्र

2 प्रतिशत है जबकि अन्य 10 प्रतिशत के पास 76 प्रतिशत है जो कि अत्यधिक आय को दर्शाता है।

अस्मिता आधारित राजनीति

वर्तमान समय में राजनीति का स्वरूप भी परिवर्तित हो रहा है। राजनीति में धर्म, भाषा, जाति, लिंग आदि का अत्यधिक प्रयोग होना शुरू हो गया है जिसके कारण एक राज्य के लोग दूसरे राज्य के लोगों को विभिन्न कारणों से हीन समझने लगे हैं। सरकारें भी धर्म, भाषा व जाति के आधार पर अपनी नीतियों का निर्धारण करने लगी हैं जिसके कारण व्यक्ति व्यक्ति में किसी न किसी आधार पर भेदभाव होने लगा है। इस प्रकार की नीतियों के वैश्वीकरण की भावना को आघात पहुँचता है और उदारीकरण के मार्ग में बाधाएं उत्पन्न होना शुरू हो जाती हैं।

सांस्कृतिक असहिष्णुता

उदारीकरण के युग में सांस्कृतिक असहिष्णुता में भी निरंतर वृद्धि हो रही है। युद्धों के कारण या अन्य कारणों से एक देश के नागरिक दूसरे देशों में शरण लेने को विवश हो जाते हैं जिसके कारण उन नागरिकों व वहाँ के मूल निवासियों में सांस्कृतिक टकराव प्रारम्भ हो जाता है। वर्तमान समय में विभिन्न देशों मे इस्लामोफोबिया भी कार्य कर रहा है कुछ नेताओं द्वारा इस्लाम के खिलाफ प्रचार किया जाता है जिसके कारण दुनिया के देशो में इस्लाम के प्रति नफरत बढ़ने लगी है। वर्तमान समय मे नागरिकों द्वारा अपनी धर्म, जाति, नस्ल को श्रेष्ठ माना जाने लगा है तथा दूसरे धर्म, जाति, नस्ल लोगों के प्रति उनका व्यवहार अपमानजनक होने लगा है जिसके कारण भी उदारीकरण की धारणा को ठेस पहुंच रही है।

जलवायु संकट

वैश्वीकरण के युग में उदारवाद के सामने एक मुख्य समस्या जलवायु संकट भी है। वर्तमान समय में प्राकृतिक सम्पदाओं के अत्यधिक दोहन के कारण जलवायु संकट भी उत्पन्न हो गया है। उदारीकरण के कारण पर्यावरण में निरन्तर परिवर्तन दृष्टिगोचर हो रहे हैं। समुंद्र के जलस्तर में निरन्तर वृद्धि हो रही है जिसके कारण आगामी समय में समुद्र तटीय देशों की डूबने की प्रबल संभावनाएँ हैं। जनसंख्या में निरन्तर वृद्धि हो रही है जिसके कारण खाद्यय पदार्थों की भविष्य में कमी होने वाली है। जल प्रबंधन, कूड़ा कचरा निष्पादन की समस्या उत्पन्न हो रही है। ध्वनि प्रदूषण, जल प्रदूषण, वायु प्रदूषण आदि की समस्या वर्तमान समय में चरम सीमा पर दिखाई देने लगा है। कई देशों की राजधानियों में तो वायु प्रदूषण इतना अधिक हो गया है जिसके कारण लोगों को साँस लेने में तकलीफ होने लगी है। अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर जलवायु संकट की रोकथाम के लिए अनेक देश प्रयासरत हैं ताकि भावी पीढ़ीयों को स्वच्छ वातावरण उपलब्ध हो सके।

डिजिटल अधिनायकवाद और डेटा नियंत्रण

उदारीकरण के कारण बहुराष्ट्रीय कम्पनियों द्वारा लोगों के डेटा को चुरा लिया जाता है तथा अन्यत्र प्लेटफोर्म पर बेच दिया जाता है जिसके कारण कुछ कम्पनियों द्वारा अपने लाभ के लिए लोगों के डेटा का दुरुपयोग भी किया जाता है। वर्तमान समय में डेटा के दुरूपयोग के कारण साइबर फरोड़ अत्यधिक बढ गये हैं। लोगों की मेहनत की कमाई को साइबर ठगों द्वारा चुरा लिया जाता है जिसके कारण सरकारें भी दूसरे देशों की कम्पनियों को संदेह की दृष्टि से देखने लगी हैं और इस संदेह के वातावरण में वैश्वीकरण की प्रक्रिया अवरुद्ध होने लग जाती है।

निष्कर्ष

उदारवाद ने वर्तमान युग में अत्यधिक महत्वपूर्ण भूमिका का निवर्हन किया है। उदारवाद ने मानव को व्यक्तिगत स्वतंत्रता, लोकतंत्र और मानवाधिकार प्रदान किया हैं जिनके कारण मानवीय जीवन में सकारात्मक परिवर्तन हुए हैं। यदि किसी विचारधारा का सकारात्मक पहलू होता है तो उस विचारधारा का नकारात्मक पहलू भी समाज के सम्मुख दिखाई पड़ता है। वैश्वीकरण के युग में उदारवाद भी अपने आप को इस नकारात्मकता से अछूता नहीं रख सका। उदारवाद के कारण विश्व में सांस्कृतिक पतन, स्वच्छंदता, पर्यावरण प्रदूषण आदि के कारण मानवीय जीवन खतरे में पड़ गया है। आधुनिक उदारवाद ने इन आलोचनाओं व कमियों को दूर करने का प्रयास किया हैं और कल्याणकारी राज्य की अवधारणा को अपनाया है, जहाँ राज्य केवल कानून व्यवस्था की भूमिका तक ही सीमित था। अतः अंत में हम यह कह सकते हैं कि उदारवाद एक गतिशील विचारधारा है जो समय के साथ विकसित हुई है।

संदर्भ ग्रंथ सूची

1. ए0 पी0 ग्राइम्स, "द प्रैग्मैटिक कोर्स ऑफ लिबरलिज्म इन वेस्टर्न पॉलिटिकल क्वार्टरली" वॉल्यूम- 9, नंबर- 3 (सितंबर- 1956), पृ0 सं0 633- 640
2. एफ0 डब्ल्यू0 कोकर, "अमेरिकन पॉलिटिकल साइंस रिव्यू में उदारवाद के कुछ वर्तमान आलोचक" , खंड- 67, संख्या-1, (मार्च, 1953), पृष्ठ सं0-1
3. डेविड निकोल्स, "पॉजिटिव लिबर्टी" द अमेरिकन पॉलिटिकल साइंस रिव्यू, वॉल्यूम- 56, नंबर - 1 (मार्च, 1962), पृ0 स0-118
4. जगदीश चन्द्र जौहरी, समकालीन राजनीतिक सिद्धांत (नये आयाम, मूल संकल्पनाएं और प्रमुख प्रवृतियाँ), स्टर्लिंग पब्लिशर्ज प्रा० लि०, नई दिल्ली, 2002,, पृ० सं०- 700,
5. वोल्कोम, "द लिबरल ट्रेडिशन इन अमेरिकन थॉट" , पृ0 सं0-13
6. https://www.jagran.com/world/america-donald-trump-tariff-on india-brics-and-trade-tensions-revealed-24012710.html
7. https://wir2022.wid.world/wwwsite/uploads/2021/12/WorldInequalityReport2022_Full_Report.pdf
8. Curato, N. (2024). Defining digital authoritarianism. Philosophy & Technology, 37(2), 1-22. https://doi.org/10.1007/s13347-024-00754-8
9. Frazer, E., & Macfadyen, A. (2002). The politics of identity: Liberal political theory and the dilemmas of difference. Polity Press.
10. Haas, E. B. (1997). Nationalism, liberalism, and progress: The rise and decline of nationalism. Cornell University Press.

11. Higgs, R., & Close, C. P. (Eds.). (2007). The challenge of liberty: Classical liberalism today. Independent Institute.
12. Lilla, M. (2017). The once and future liberal: After identity politics. Harper.